मॉडल प्रष्नोत्तर सेट(01)

मेजर– 1 संस्कृत

सत्र 2022–2026 से प्रभावी

विनोबा भावे विष्वविद्यालय, हजारीबाग–825301 (झारखण्ड)

स्नातक संस्कृत प्रथम समसत्र

संस्कृत व्याकरण एवं नीति कथा

Credit – 6 पूर्णांक –100

SAN-MJ-1 अवधि– 3घंटे

पाठ्यक्रम पूर्णांक – 75

1. पाठ्य षब्दरूप – 10 घण्टे
   देव, कवि, भानु, पितृ, लता, मति, नदी, धेनु, वधू, मातृ, फल, वारि, मधु, मरुत्, आत्मन्, सर्व, तद्, एतद्, यद्, इदम्, जगत्, अस्मद् तथा युष्मद्।
2. धातुरूप – 10 घण्टे
   लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् एवं लृट् लकार में
   पाठ्य धातुरूप– पठ्, पच्, भू, कृ, अस्, अद्, हन्, हृ, दिव्, रुध्, क्री, चुर् तथा सेव्।
3. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद 10 घण्टे
4. संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद 10 घण्टे
5. पंचतन्त्रम् (अपरीक्षितकारकम्) 15 घण्टे
6. लघु सिद्धान्त कौमुदी – प्रत्याहार, संज्ञा, सन्धि तथा पारिभाषिक षब्द 35 घण्टे

मॉडल प्रष्नोत्तर–पत्र

द्वारा– डॉ. सुबोध कुमार साहु,
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,
संत कोलम्बा महाविद्यालय, हजारीबाग।

ग्रुप– ए

प्र संख्या (1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। 1×5 =5

(क) पठ् धातु लट् लकार् प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप बनता है।

उत्तर :–पठन्ति ।

(ख) पितृ शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप बनेगा।

उत्तर :– पितुः ।

(ग) सवर्णसंज्ञा विधायक सूत्र कौन सा है ?

उत्तर :– तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्।

(घ) हश् प्रत्याहार में कौन–कौन से वर्ण आते हैं ?

उत्तर :–हश् = ह, य, व, र, ल, ञ, म, ङ, ण, न, झ, भ, घ, ढ, ध, ज, ब, ग, ड, द।

(ङ) ''देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्'' यह सन्धि किस सूत्र से होगा ?

उत्तर :– वृद्धिरेचि

प्र. संख्या (2) निम्नलिखित में से किसी एक शब्द का रूपचतुर्थी एवं पंचमी विभक्ति के तीनों वचनों में लिखे । 5×1 =5

(क) देव (ख) भानु (ग) लता (घ) फल

उत्तर :– (क) देव शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पंचमी विभक्ति	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः

(ख) भानु शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी विभक्ति	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः

(ग) लता शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी विभक्ति	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः

(घ) फल शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी विभक्ति	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः

प्र. संख्या (3) निम्नलिखित में से किसी एक धातु का धातुरूप लङ् लकार् में लिखें। 5×1 =5

(क) पच् (ख) कृ (ग) हन् (घ) भू

उत्तर :– (क) पच् धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

(ख) कृ धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

(ग) हन् धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

(घ) भू धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

ग्रुप– बी

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें।

प्र. संख्या (4) निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर दें। **7.5×2= 15**

(अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिये गए प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में दें।**1.5×5 =7.5**

डॉ. भीमराव–आम्बेडकरः संस्कृतं पठितुम् इष्टवान् आसीत्, परन्तु सः अस्पृश्यः इति कारणतः कश्चन संस्कृतज्ञः आम्बेडकरं संस्कृतं पाठयितुं निराकृतवान् – इति विषयः तु आम्बेडकर–महोदयस्य जीवनसम्बन्धि–पुस्तकेषु लिखितः अस्ति; सः विषयः तु प्रचारे अपि अस्ति। 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति संविधानसभायां संशोधन–प्रस्तावः आनीतः आसीत्, यस्य प्रस्तावस्य हस्ताक्षर–कर्तृषु प्रस्तावोपस्थापकेषु च डॉ. आम्बेडकरः अपि अन्यतमः आसीत्।

अयं विषयः अपि कतिपयवर्षेभ्यः पूर्वं ज्ञातः आसीत्। परम् इदानीं कश्चन नूतनः विषयः प्रकाशम् आगतः अस्ति। नवप्राप्तप्रमाणैः ज्ञायते यत् डॉ. आम्बेडकरः न केवलं संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान्, न केवलं सः संस्कृतं जानाति स्म, अपितु सः संस्कृतेन भाषते स्म इति! यतः संविधानसभायां यदा राजभाषा–सम्बन्धे चर्चा प्रवर्तते स्म तदा डॉ. आम्बेडकरः पण्डितलक्ष्मीकान्त–मैत्रेण सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान्। तत्सम्बन्धे तत्कालीनेषु वार्तापत्रेषु प्रमुखतया वार्ताः प्रकाशिताः आसन्।

(क) डॉ. आम्बेडकरः केन सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् ?

(ख) कः संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान् ?

(ग) संविधानसभायां कः संशोधनप्रस्तावः आनीतः ?

(घ)डॉ. आम्बेडकरः किं पठितुम् इष्टवान् आसीत् ?

(ङ) उपर्युक्तगद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत ।

उत्तरम् :–

(क) डॉ. आम्बेडकरः पण्डितलक्ष्मीकान्तमैत्रेण सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् ।

(ख) डॉ. आम्बेडकरः संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान् ?

(ग) 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति संविधानसभायां संशोधन–प्रस्तावः आनीतः।

(घ) डॉ. आम्बेडकरः संस्कृतं पठितुम् इष्टवान् आसीत्।

(ङ) डॉ. भीमराव आम्बेडकरस्य संस्कृतनिष्ठा।

प्र. संख्या (4) (ब) निम्नलिखत गद्यांश का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करें। **7.5×1=7.5**

गंगा भारतवर्षस्य नदीषु श्रेष्ठा अस्ति। इयं हिमालयात् प्रभवति। पुराकाले भगीरथेन इयं नदी घोरतपसा स्वर्गात् पृथिव्याम् आनीता। गंगायाः पुण्योदकेषु स्नानं सर्वकल्मषापहं मन्यते। अस्याः कुलयोः अनेकानि प्रमुखानि नगराणि तिष्ठन्ति।

उत्तरम् :– गंगा भारतवर्ष के नदियों में श्रेष्ठ है। यह हिमालय से निकलती है। प्राचीनकाल में भगीरथ ने इस नदी को घोर तपस्या से स्वर्ग से पृथिवी में लाया। गंगा के पुण्य जल में स्नान सभी पापों को दूर करनेवाला माना जाता है। इसके दोनों तटों पर अनेक प्रमुख नगर हैं।

प्र. संख्या(5) निम्नलिखित में से किन्हीं तीन श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद करें।**5×3=15**

(क) शीलं शौचं क्षान्तिर्दाक्षिण्यं मधुरता कुले जन्म।

न विराजन्ति हि सर्वे वित्तविहीनस्य पुरुषस्य।।

(ख) विफलमिह पूर्वसुकृतं, विद्यावन्तोऽपि कुलसमुद्भूताः।

यस्य यदा विभवः स्यात्तस्य तदा दासतां यान्ति।।

(ग) व्याधितेन सशोकेन चिन्ताग्रस्तेन जन्तुना।

कामार्तेनाऽथ मत्तेन दृष्टः स्वप्नो निरर्थकः।।

(घ) सा जिह्वा या जिनं स्तौति तच्चित्तं यज्जिने रतम्।

तावेव च करौ श्लाघ्यौ यौ तत्पूजाकरौ करौ।।

(ङ) अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।

अतिलोभाऽभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।।

उत्तरम् :–

(क) श्रेष्ठ आचरण, दया, उत्तम स्वभाव, पवित्रता, क्षमा एवं उत्तम कुल में जन्म होना ये सभी गुण दरिद्र पुरुष में विराजमान होने पर भी उसकी कीर्ति बढ़ाने में सक्षम नहीं है।

(ख) इस संसार में पहले के किए गए सत्कार्य पुण्य इत्यादि व्यर्थ ही हैं क्योंकि बड़े बड़े कुलीन एवं विद्वान् पुरुष भी धनवान् व्यक्तियों के यहाँ दास बने हुए हैं।

(ग) व्याधिग्रस्त (रोगी), शोकाकुल, चिन्ताओं से ग्रस्त, कामासक्त एवं उन्मत्त पुरुष के द्वारा देखा हुआ स्वप्न निरर्थक ही होता है।

(घ) जिस जिह्वा से जिनों की स्तुति की जाती है वही जिह्वा जिह्वा है। जो चित्त जिनों (जैन साधुओं) की स्तुति का ध्यान करता है वही चित्त चित्त है और जिन हाथों से जिनों की पूजा अर्चना होती है वही हाथ प्रशंसा के योग्य है।

(ङ) मनुष्य को अपने जीवन में बहुत अधिक लालच नहीं करना चाहिए एवं न ही लोभ का पूर्णतया त्याग करना चाहिए, क्योंकि जो जन अत्यधिक लोभी होते हैं उनके मस्तिष्क पर विपत्ति के बादल हमेशा घूमते रहते हैं।

प्र. संख्या (6) ब्राह्मणी–नकुल कथा का सारांश अपने शब्दों में लिखें।**15×1=15**

अथवा

मूर्ख पण्डित की कथा का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तरम् :–**ब्राह्मणी–नकुल कथा**

किसी नगर में देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसकी गर्भिणी स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसी दिन एक नेवली भी एक नेवले को उत्पन्न करके मर गयी ।तब पुत्र पर स्नेह करनेवाली उस ब्राह्मणी ने पुत्र के समान उस नेवले को भी दुग्धपान, उबटन तथा तेल मालिश आदि क्रिया के द्वारा पाला पोसा। किन्तु वह उसका विश्वास नहीं करती थी। पुत्रस्नेह के सर्वोपरि होने के कारण हमेशा डरती रहती थी कि कभी यह अपने जातिगत दोष के कारण पुत्र का अनिष्ट न कर बैठे । क्योंकि कहा भी गया है –

कुपुत्रोऽपि भवेत्पुंसां हृदयानन्दकारकः।

दुर्विनीतः कुरूपोऽपि, मूर्खोऽपि व्यसनी खलः।।

अर्थात् अपना पुत्र चाहे कितना भी दुर्विनीत, कुरूप, मूर्ख, व्यसनी तथा दुर्वृत्त क्यों न हो, वह अपने माता–पिता के हृदय को आह्लादित करने वाला ही होता है।

लोग ऐसा कहते हैं कि चन्दन अत्यन्त शीतल होता है किन्तु पुत्र के शरीर का स्पर्श तो चन्दन से भी बढ़कर शीतल तथा आनन्ददायक होता है।

एक दिन ब्राह्मणी ने पुत्र को शय्या पर सुलाकर और जल के घड़े को लेकर पति से कहा – स्वामिन्! मैं जल लाने के लिए तालाब जा रही हूँ। आप इस नेवले से बालक की रक्षा करना। उसके चले जाने पर ब्राह्मण भी घर को खाली छोड़कर भिक्षाटन के लिए कहीं चला गया। इसी समय दुर्भाग्य से एक काला साँप बिल से निकला। नेवले ने उस सर्प को देखते ही उसे अपना स्वाभाविक शत्रु समझकर भाई की रक्षा के निमित्त सर्प के साथ लड़कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए। फिर ब्राह्मणी के लौटने पर वह नेवला प्रसन्नतापूर्वक अपने कार्य को प्रकट करने के लिए खून से लथपथ मूँह वाला माता के पास पहूँचा। वह उसके रक्तार्द्र मुख को देखते ही शंकित हो उठी और यह सोचकर कि इस पापी नेवले ने मेरे पुत्र को मारकर खा लिया है, क्रोधातुर हो उसने जल से भरे घड़े को नेवले के ऊपर पटक दिया।

इस प्रकार नेवले को मारकर विलाप करती हुई वह ब्राह्मणी ज्यों ही घर में आयी त्यों ही उसने पुत्र को पूर्ववत् सोते देखा और खाट के पास में ही अुकड़े टुकड़े किये हुए काले साँप को देखकर नकुल की मृत्यु से शोकाकुल हो उठी और आनी छाती एवं माथे को पीट पीटकर रोने लगी। इतने में भिक्षा लेकर ब्राह्मण भी आ गया। घर के अन्दर जाकर देखा कि नकुल के वध से ब्राह्मणी शोकाकुल हो बिलख–बिलख कर रो रही है। पति को देखते ही उसने रोकर कहा – अरे लोभी, लोभाभिभूत होकर तुमने मेरी बात नहीं मानी। तो अब पुत्र की मृत्यु के दुःखरूपी वृक्ष के फल भोगो। अथवा यह ठीक ही कहा गया है –

"अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।

अतिलोभाभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।।"

मूर्ख पण्डित की कथा

किसी नगर में चार ब्राह्मण आपस में मित्र बनकर रहते थे। बचपन में उनका विचार हुआ कि दूसरे देश में जाकर विद्या पढ़ी जाय। दूसरे दिन आपस में विचार करने के बाद वे विद्या पढ़ने के लिएकान्यकुब्ज देश की ओर चल पड़े और वहाँ पहूँचकर किसी पाठशाला में विद्या पढ़ने लगे। एकाग्रचित्त से बारह वर्ष तक अध्ययन करने केबाद ये चारों अद्‌भुत विद्वान् हो गये। एक दिन चारों ने आपस में विमर्श किया – हम सभी विद्याओं में निपुण हो चुके। अब गुरुजी की आज्ञा लेकर हमें अपने घर चलना चाहिए। यह निश्चय करके वे गुरुजी के पास गए और उनसे पूछकर अनुमति प्राप्त करके अपनी–अपनी पुस्तकों को साथ लेकर घर के लिए प्रस्थान कर दिए। कुछ दूर जाने के बाद मार्ग दो तरफ जाते हुए देखकर किस मार्ग से चला जाय, यह निश्चय करने के लिये एक जगह बैठ गये।

उनमें से एक ने पूछा – 'किस मार्ग से चला जाय ?'

उसी समय पास के नगर में एक बनिये का लड़का मर गया था। उसके दाह संस्कार के लिए वाणिक् लोग जा रहे थे। उस शवयात्रा को देखकर चारों में से एक ने पुस्तक देखकर कहा –**''महाजनो येन गतः स पन्थः''** अर्थात् महाजन लोग जिस रास्ते से जायें, उसी रास्ते से अन्य लोगों को भी जाना चाहिए। अतः हमें भी वणिक्समूह के साथ चलना चाहिए। उनके कथन पर चारों व्यक्ति उस वणिक्समूह के पीछे चल दिये। जैसे ही वे पण्डित महाजनों के साथ चलते हैं वैसे ही वहाँ श्मसान पर उन्होंने कोई गधा देख लिया। तब दूसरे ने पुस्तक खोलकर देखा और कहा –

उत्सवे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।

राजद्वारे श्मषाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।

उत्सव, मांगलिक कार्यों में, विपत्ति में, अकाल में और शत्रुओं द्वारा उपद्रव काल में, राजसभा में तथा श्मशान में जो साथ देता है वही सच्चा बन्धु होता है।

अतः यह हमारा भाई है। उसकी बात सुनकर कोई उस गधे को गले लगाने लगा तथा कोई उसके चरण धोने लगा। तत्पश्चात् जब उन पण्डितों ने चारों दिशाओं में देखा तो उन्होंने तीव्र गति से जाते हुए एक ऊँट को देखा। उसे देखकर उन्होंने कहा–यह क्या है? तब तीसरे ने पुस्तक खोलकर देखा और कहा–**धर्मस्य त्वरिता गतिः।** अर्थात् धर्म की गति तीव्र होती है तो निश्चय ही यह साक्षात् धर्म ही है। इसके पश्चात् चौथे पण्डित ने कहा–**इष्टं धर्मेण योजयेत्।** अर्थात् बन्धु को धर्म के साथ जोड़ देना चाहिए। ऐसा सोचकर उन पण्डितो ं ने उस गधे को ऊँट के गले से बांध दिया। फिर यह बात किसी ने गधे के स्वामी धोबी को बताई तो वह धोबी उन पण्डितो को मारने के लिए वहाँ पहुँचा। तब दूर से ही उसे देखकर वे पण्डित वहाँ से भाग निकले। इसके पश्चात् भागते हुए कुछ दूर आगे बढ़ने पर उन्हें एक नदी मिली। उस नदी की जलधाराओ ं में आते हुए एक पलाश के पत्ते

को देखकर उन पण्डितों में से एक ने कहा–**आगमिष्यति यत्पत्रं तद्स्मांस्तारयिष्यति'** ।अर्थात् यह आने वाला पत्ता हम सभी को नदी पार करा देगा। यह कहकर वह मूर्ख पण्डित नदी की धारा में कूद पड़ा। उसे नदी की तेज धारा में बहता हुआ देखकर उसकी चोटी पकड़ कर दूसरे पण्डित ने कहाः–

सर्वनाषे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः।

अर्धेन कुरुते कार्यं, सर्वनाषो हि दुसहः।।

अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति पूर्ण विनाश की स्थिति आने पर आधा छोड़ देता है और अपना कार्य सिद्ध करते है। क्योंकि सर्वनाश बड़ा ही दुखदायी होता है।

ऐसा कहकर उसने नदी में बहने वाले उस पण्डित का सिर काट दिया।

इसके पश्चात् आगे जाते हुए उन पण्डितों को एक गांव मिला। ग्रामीणों ने उन्हे ं अलग–अलग अपने–अपने घरो ं मे ं भोजन के लिए निमंत्रित किया, तब एक को घी और खाण्ड से मिश्रित सेवई भोजन में दी गई। उन्हें देखकर उस पण्डित ने विचार कर कहा–**''दीर्घसूत्री विनष्यति।''** अर्थात् दीर्घसूत्री विनाश को प्राप्त हो जाता है। ऐसा कहकर वह भोजन त्याग कर चला गया। दूसरे पण्डित को भोजन में मांड परोसा गया। उसने कहा– ''**अतिविस्तारविस्तीर्णं तदभ्वेन्न चिरायुषम्।''** अर्थात् अधिक विस्तार वाली वस्तु दीर्घ जीवन प्रदान नहीं करती। ऐसा कहकर वह भोजन का त्याग कर चला गया। उधर तीसरे पण्डित को भोजन में बड़ा दिया गया। उसे देखते ही पण्डित ने कहा–**''छिद्रष्वनर्था बहुलीभवन्ति।''** अर्थात् छेद हो जाने पर विपत्ति बढ़ती है। ऐसा कहकर वह भी भोजन त्यागकर चला गया। इस प्रकार वे तीनों पण्डित भूखे भी रह गये और लोगो ं के लिए हंसी का पात्र बन गये। और अन्त में बिना खाये–पिये उस स्थान से अपने देश की ओर चले गए।

प्र. संख्या (7) (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो संज्ञा सूत्रों की व्याख्या करें।**5×2=10**

(अ) हलन्त्यम् (ब) अदर्शनं लोपः (स) नीचैरनुदात्तः (द) तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्

(ख) प्रत्याहारसूत्र लिखते हुए झल् या अच् प्रत्याहार में स्थित वर्णों को लिखें।**5×1=5**

उत्तर :–(क) (अ)सूत्रम् –हलन्त्यम्

पदच्छेदः – हल् अन्त्यम् ।

वृत्तिः –उपदेशेऽन्त्यं हलित् स्यात्। उपदेश आद्योच्चारणम्। सूत्रेष्वदृष्टं पदं सूत्रान्तरादनुवर्तनीयं सर्वत्र।

अर्थ –उपदेश अवस्था में अन्त्य हल् की इत्संज्ञा होती है। पाणिनि आदि आचार्यों के प्रथम (आद्य) उच्चारण को उपदेश कहते हैं। ''हलन्त्यम्'' सूत्र में उपदेश और इत् पद नहीं हैं? इसका उत्तर यह है कि सूत्रों में न देखा गया (अदृष्ट) पद अन्य सूत्रों से ले लेना (अनुवृत्ति करना) चाहिये। आवश्यकता के अनुसार सब स्थानों में।

(ब) सूत्रम् –अदर्शनं लोपः।

पदच्छेदः – अदर्शनं लोपः।

वृत्तिः –प्रसक्तस्याऽदर्शनं लोपसंज्ञं स्यात्।

अर्थ–विद्यमान के अदर्शन की लोप संज्ञा होती है। अर्थात् प्राप्त का (प्रसक्तस्य) न दिखाई देना या न सुना जाना अदर्शन है, उसकी 'लोप' संज्ञा होती है।

(स) सूत्रम् –नीचैरनुदात्तः।

पदच्छेदः – नीचैः अनुदात्तः।

वृत्तिः –ताल्वादिषु सभागेषु स्थानेष्वधोभागे निष्पन्नोऽच् अनुदात्तसंज्ञः स्यात्।

अर्थ– कण्ठ, तालु आदि सखण्ड स्थानों के निम्नभाग से उच्चरित स्वर की अनुदात्त संज्ञा होती है।

(द) सूत्रम् –तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्।

पदच्छेदः –तुल्यास्य प्रयत्नं सवर्णम्।

वृत्तिः –ताल्वादिस्थानमाभ्यत्तर प्रयत्नश्चेत्येतद् द्वयं यस्य येन तुल्यं तन्मिथः सवर्णसंज्ञं स्यात्। (ऋ लृ वर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्) (वर्णानां स्थानानि) अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः। इचुयशानां तालु। ऋटुरषाणां मूर्धा। लृतुलसानां दन्ताः। उपूपध्मानीयानामोष्ठौ । ञ्मङणनानां नासिका च। एदैतो कण्ठतालू, ओदौतोः कण्ठोष्ठम्। वकारस्य दन्तोष्ठम्। जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्। नासिकानुस्वारस्य।

अर्थ–तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न जिन वर्णों के समान हों उनकी परस्पर सवर्ण संज्ञा होती है। (ऋ तथा लृ वर्ण की परस्पर सवर्ण संज्ञा कहनी चाहिये।)

1. अ (आ) कवर्ग (क ख ग घ ङ) हकार और विसर्ग–कण्ठ
2. इ (ई) चवर्ग (च छ ज फ ञ्) य तथा श – तालु।
3. ऋ (ॠ) टवर्ग (ट ठ ड ढ ण) र तथा ष – मूर्धा।
4. लृ तवर्ग (त थ द ध न) ल तथा स दन्त।
5. उ (ऊ) पवर्ग (प फ ब भ म) तथा उपध्मानीयओष्ठ

6. ञ् म ङ ण न नासिका और अपने वर्ग का स्थानी। यथा ङ का स्थान कण्ठ नासिका है तथा ञ् का तालु नासिका है। ए तथा ऐ = कण्ठ + तालु। ओ + औ = कण्ठ + ओष्ठ। जिह्वामूलीय का जिह्वा का मूलभाग। अनुस्वार (ं) का नासिका स्थान है।

उत्तर (ख) प्रत्याहार सूत्र – 1. अइउण् 2. ऋलृक् 3. एओङ् 4. ऐऔच् 5. हयवरट् 6. लण् 7 ञमङणनम् 8. झभञ् 9. घढधष् 10. जबगडदश् 11. खफछठथचटतव् 12. कपय् 13. शषसर् 14. हल्।

झल् प्रत्याहार–झ भ घ ढ ध ज ब ग ड द ख फ छ ठ थ च ट त क प श ष स ह।

अच् प्रत्याहार – अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ।

प्र. सख्या (8) (क) निम्नलिखित में से दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या लिखे।**5×2=10**

(अ) आद्गुणः (ब) एचोऽयवायावः (स) एङि पररूपम् (द) एङः पदान्तादति।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक का सूत्र निर्देश पूर्वक सन्धि करें।**5×1=5**

(अ) श्री + ईशः = श्रीशः (ब) देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्

उत्तर–

(8) (क) (अ) सूत्रम् – आद्गुणः ।

पदच्छेदः – आत् गुणः

वृत्तिः – अवर्णादचि परे पूर्वपरयोरेको गुण आदेशः स्यात्।

अर्थ – अवर्ण से अच् परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर गुणसंज्ञक एकादेश होता है। यथा – उप+ इन्द्रः = उपेन्द्रः, गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्।

(ब) सूत्रम् – एचोऽयवायावः ।

पदच्छेदः – एचः अयवायावः।

वृत्तिः – एचः क्रमादय् अव् आय् आव् एते स्युरचि।

अर्थ – अच् के परे होने पर एच् के स्थान पर अय्, अव्, आय्, आव् ये आदेश होते हैं। यथा – हरे + ए = हरये, विष्णो + ए = विष्णवे,

नै + अकः = नायकः, पौ + अकः = पावकः।

(स) सूत्रम् – एङि पररूपम् ।

पदच्छेदः – एङि पररूपम्।

वृत्तिः – आदुपसर्गादेङादौ धातौ पररूपमेकादेशः स्यात्।

अर्थ – अवर्णात उपसर्ग से एङादि धातु के परे रहने पर पूर्व और पर के स्थान पर पररूप एकादेश होता है। यथा – प्र + एजते = प्रेजते, उप + ओषति = उपोषति।

(द) सूत्रम् – एङः पदान्तादति।

पदच्छेदः – एङः पदान्तात् अति।

वृत्तिः – पदान्तादेङोऽति परे पूर्वरूपमेकादेशः स्यात्।

अर्थ – पदान्त एङ् से ह्रस्व अकार के परे होने पर पूर्व और पर के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होता है। यथा – हरे + अव = हरेऽव, विष्णो + अव = विष्णोऽव।

उत्तर– (8) (ख) (अ) श्री + ईशः = श्रीशः

यहाँ ''परः सन्निकर्षः संहिता'' सूत्र से श्री + ईशः की संहिता संज्ञा हुई।

पुनः ''इको यणचि'' सूत्र से यहाँ यण् प्राप्त था जिसका बाधकर ''स्थानेऽन्तरतमः'' सूत्र की सहायता से ''अकः सवर्णे दीर्घः'' सूत्र से श्री के ईकार और ईशः के ईकार के स्थान सवर्णदीर्घ ईकार एकादेश होकर बना (श्र् + ई + शः) = श्रीशः बना।

(ब) देव + ऐश्वर्यम् = देवैश्वर्यम्

यहाँ ''परः सन्निकर्षः संहिता'' सूत्र से देव + ऐश्वर्यम् की संहिता संज्ञा हुई।

पुनः ''आद्गुणः'' सूत्र से यहाँ गुण प्राप्त था जिसका बाधकर ''स्थानेऽन्तरतमः'' सूत्र की सहायता से ''वृद्धिरेचि'' सूत्र से देव के अकार और ऐश्वर्ययम् के ऐकार के स्थान पर उसका सदृशतम कण्ठतालव्य वृद्धिसंज्ञक ऐकार एकादेश होकर बना (देव् + ऐ + श्वर्यम्) = देवैश्वर्यम्।

प्र. सख्या (9) (क) निम्नलिखित में से दो सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या लिखे।**5×2=10**

(अ) स्तोः श्चुना श्चुः (ब) शश्छोऽटि (स) झलां जशोऽन्ते (द) हशि च।

(ख) निम्नलिखित में से किसी एक का सूत्र निर्देश पूर्वक सन्धि करें।**5×1=5**

(अ) शिव + छाया = शिवच्छाया (ब) मनस् + रथः = मनोरथः

उत्तर– (9) (क) (अ) सूत्रम् – स्तोः श्चुना श्चुः

पदच्छेदः – स्तोः श्चुना श्चुः।

वृत्तिः – सकारतवर्गयोः शकारचवर्गाभ्यां योगे शकारचवर्गौ स्तः।

अर्थ – सकार और तवर्ग के स्थान पर सकार और चवर्ग का योग होने पर शकार और चवर्ग आदेश हो। यथा – रामस् + शेते = रामश्शेते, रामस् + चिनोति = रामश्चिनोति, सत् + चित् = सच्चित्, शार्ङ्गिन् + जयः = शार्ङ्गिञ्जयः ।

(ब) सूत्रम् – शश्छोऽटि ।

पदच्छेदः –शश् छः अटि ।

वृत्तिः –झयः परस्य शस्य छो वाऽटि।

अर्थ–झय् से पर शकार के स्थान में छकार आदेश विकल्प से हो अट् परे होने पर।

यथा– तद् + शिवः = तच्शिवः, तच्छिव।

(स)सूत्रम् –झलां जशोऽन्ते

पदच्छेदः –झलां जशः अन्ते

वृत्तिः – पदान्ते झलां जशः स्युः।

अर्थ – पदान्त में झलों के स्थान पर जश् आदेश हों।

यथा– वाक् + ईशः = वागीशः।

(द)सूत्रम् – हशि च।

पदच्छेदः – हशि च।

वृत्तिः –तथा।

अर्थ– हश् परे होने पर भी प्लुत् अकार से परे रु के स्थान में उकार हो।

यथा– शिवस् + वन्द्यः = शिवो वन्द्यः

उत्तर– (9) (ख) (अ) शिव + छाया = शिवच्छाया

यहाँ ''परः सन्निकर्षः संहिता'' सूत्र से 'शिव+ छाया' की संहिता संज्ञा हुई।

पुनः ''छे च'' सूत्र से शिव के व में ह्रस्व अकार से छकार परे होने से तुक् का आगम हुआ। (शिव तुक् छाया)

पुनः ''हलन्त्यम्'' सूत्र से क् की और ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से तु के उ की इत्संज्ञा और तस्य लोपः सूत्र से दोनों इत्संज्ञक का लोप होकर बना (शिव त् छाया)

पुनः ''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र से त् का जश्त्व होकर बना (शिव द् छाया)

पुनः ''स्तोः श्चुना श्चुः'' सूत्र से द् का श्चुत्व होकर बना (शिव ज् छाया)

पुनः ''खरि च'' सूत्र से ज् का चर्त्व होकर बना (शिव च् छाया) = शिवच्छाया।

(ब) मनस् + रथः = मनोरथः

यहाँ ''परः सन्निकर्षः संहिता'' सूत्र से 'मनस् + रथः' की संहिता संज्ञा हुई।

पुनः ''ससजुषो रुः'' सूत्र से सकार का रु हुआ (मन रु रथः)

पुनः ''उपदेशेऽजनुनासिक इत्'' सूत्र से रु के उ की इत्संज्ञा और तस्य लोपः'' सूत्र से उसका लोप हुआ (मन र् रथः)

पुनः इस अवस्था में ''हशि च'' सूत्र से र् को उ प्राप्त हुआ तो ''रो रि'' सूत्र से र् का लोप प्राप्त होने पर दोनों के तुल्य बल विरोध में ''विप्रतिषेधे परं कार्यम्'' सूत्र के अनुसार 'उत्व' का बाधकर लोप प्राप्त होता है। किन्तु ''पूर्वत्राऽसिद्धम्''सूत्र से लोप के असिद्ध हो जाने पर ''हशि च'' सूत्र से र् का उकार हुआ (मन उ रथः)

पुनः ''आद्गुणः'' सूत्र से गुण होकर बना = मनोरथः ।

नई षिक्षा नीति 2020 के आलोक में निर्मित पाठ्यक्रम **(NEP, FYUGP 2022)**

सत्र 2022–2026 से प्रभावी

विनोबा भावे विष्वविद्यालय, हजारीबाग–825301 (झारखण्ड)

स्नातक संस्कृत प्रथम/द्वितीय/तृतीय समसत्र

संस्कृत व्याकरण एवं नीति कथा

Credit – 3 पूर्णांक –100

SAN-IRC अवधि – 3घंटे

पाठ्यक्रम

1. षब्दरूप – 10 घण्टे
   पाठ्य षब्दरूप – देव, कवि, भानु, पितृ, लता, मति, नदी, धेनु, वधू, मातृ, फल, वारि, मधु, मरुत्, आत्मन्, सर्व, तद्, एतद्, यद्, इदम्, जगत्, अस्मद् तथा युष्मद्।
2. धातुरूप– 10 घण्टे
   लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् एवं लृट् लकार में
   पाठ्य धातुरूप– पठ्, पच्, भू, कृ, अस्, अद्, हन्, हू, दिव्, रुध्, क्री, चुर् तथा सेव्।
3. हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद 05 घण्टे
4. संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद 05 घण्टे
5. पंचतन्त्रम्(अपरीक्षितकारकम्) 5 घण्टे

मॉडल प्रष्नोत्तर–पत्र

द्वारा– डॉ. सुबोध कुमार साहु,

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत विभाग,

संत कोलम्बा महाविद्यालय, हजारीबाग।

ग्रुप– ए

प्र संख्या (1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें। 1×10=10

(क) पठ् धातु लट् लकार् प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप बनता है।

उत्तर :– पठन्ति ।

(ख) पितृ शब्द का षष्ठी एकवचन में रूप बनेगा।

उत्तर :– पितुः ।

(ग) युष्मद् शब्द का पंचमी बहुवचन में रूप बनता है।

उत्तर :–युष्मत्।

(घ) लता शब्द का सप्तमी एकवचन में रूप बनता है।

उत्तर :– लतायाम्।

(ङ) पंचतंत्र के रचयिता कौन हैं?

उत्तर :– श्रीविष्णुशर्मा।

(च) क्षपणक कथा में सेठ का क्या नाम था ?

उत्तर :– मणिभद्र।

(छ) पच् धातु लोट् लकार् मध्यम पुरुष एकवचन में रूप बनता है।

उत्तर :– पच।

(ज) भू धातु लृट् लकार् प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप बनता है।

उत्तर :– भविष्यन्ति

(झ) सेव् धातु लट् लकार् प्रथम पुरुष के तीनों रूपों को लिखें।

उत्तर :– सेवते, सेवेते, सेवन्ते।

(ञ) अस्मद् शब्द का पंचमी एकवचन में रूप में बनता है।

उत्तर :– मत्।

प्र. संख्या (2) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को पढ़कर दिये गए प्रश्नों का उत्तर संस्कृत में दें। **1×5 =5**

डॉ. भीमराव–आम्बेडकरः संस्कृतं पठितुम् इष्टवान् आसीत्, परन्तु सः अस्पृश्यः इति कारणतः कश्चन संस्कृतज्ञः आम्बेडकरं संस्कृतं पाठयितुं निराकृतवान् – इति विषयः तु आम्बेडकर–महोदयस्य जीवनसम्बन्धि–पुस्तकेषु लिखितः अस्ति; सः विषयः तु प्रचारे अपि अस्ति। 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति संविधानसभायां संशोधन–प्रस्तावः आनीतः आसीत्, यस्य प्रस्तावस्य हस्ताक्षर–कर्तृषु प्रस्तावोपस्थापकेषु च डॉ. आम्बेडकरः अपि अन्यतमः आसीत्।

अयं विषयः अपि कतिपयवर्षेभ्यः पूर्वं ज्ञातः आसीत्। परम् इदानीं कश्चन नूतनः विषयः प्रकाशम् आगतः अस्ति। नवप्राप्तप्रमाणैः ज्ञायते यत् डॉ. आम्बेडकरः न केवलं संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान्, न केवलं सः संस्कृतं जानाति स्म, अपितु सः संस्कृतेन भाषते स्म इति! यतः संविधानसभायां यदा राजभाषा–सम्बन्धे चर्चा प्रवर्तते स्म तदा डॉ. आम्बेडकरः

पण्डितलक्ष्मीकान्त–मैत्रेण सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान्। तत्सम्बन्धे तत्कालीनेषु वार्तापत्रेषु प्रमुखतया वार्ताः प्रकाशिताः आसन्।

(क) डॉ. आम्बेडकरः केन सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् ?

(ख) कः संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान् ?

(ग) संविधानसभायां कः संशोधनप्रस्तावः आनीतः ?

(घ) डॉ. आम्बेडकरः किं पठितुम् इष्टवान् आसीत् ?

(ङ) उपर्युक्तगद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत ।

उत्तरम् :–

(क) डॉ. आम्बेडकरः पण्डितलक्ष्मीकान्तमैत्रेण सह संस्कृतेन वार्तालापं कृतवान् ।

(ख) डॉ. आम्बेडकरः संस्कृतस्य राजभाषात्वं समर्थितवान् ?

(ग) 'भारतस्य राजभाषा संस्कृतं भवेत्' इति संविधानसभायां संशोधन–प्रस्तावः आनीतः।

(घ) डॉ. आम्बेडकरः संस्कृतं पठितुम् इष्टवान् आसीत्।

(ङ) डॉ. भीमराव आम्बेडकरस्य संस्कृतनिष्ठा।

प्र. संख्या (3) निम्नलिखत गद्यांश का संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करें। **5×1=5**

गंगा भारतवर्ष के नदियों में श्रेष्ठ है। यह हिमालय से निकलती है। प्राचीनकाल में भगीरथ ने इस नदी को घोर तपस्या से स्वर्ग से पृथिवी में लाया। गंगा के पुण्य जल में स्नान सभी पापों को दूर करनेवाला माना जाता है। इसके दोनों तटों पर अनेक प्रमुख नगर हैं।

उत्तरम् :– गंगा भारतवर्षस्य नदीषु श्रेष्ठा अस्ति। इयं हिमालयात् प्रभवति। पुराकाले भगीरथेन इयं नदी घोरतपसा स्वर्गात् पृथिव्याम् आनीता। गंगायाः पुण्योदकेषु स्नानं सर्वकल्मषापहं मन्यते। अस्याः कुलयोः अनेकानि प्रमुखानि नगराणि तिष्ठन्ति।

ग्रुप– बी

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दें।

प्र. संख्या (4) निम्नलिखित में से किन्हीं चार शब्दों के रूप चतुर्थी एवं पंचमी विभक्ति के तीनों वचनों में लिखे । 5×4 =20

(क) देव (ख) भानु (ग) लता (घ) फल (ङ) वारि (च) आत्मन्

उत्तर :– (क) देव शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः
पंचमी विभक्ति	देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः

(ख) भानु शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी विभक्ति	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः

(ग) लता शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पंचमी विभक्ति	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः

(घ) फल शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पंचमी विभक्ति	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः

(ङ) वारि शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पंचमी विभक्ति	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः

(च) आत्मन् शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चतुर्थी विभक्ति	आत्मने	आत्माभ्याम्	आत्मभ्यः
पंचमी विभक्ति	आत्मनः	आत्माभ्याम्	आत्मभ्यः

प्र. संख्या (5) निम्नलिखित में से किन्हीं चार धातुओं के धातुरूप लङ् लकार् में लिखें। 5×4 =20

(क) पच् (ख) कृ (ग) हन् (घ) भू (ङ) अद् (च) हु

उत्तर :– (क) पच् धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपचः	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

(ख) कृ धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

(ग) हन् धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
मध्यम पुरुष	अहन्	अहतम्	अहत
उत्तम पुरुष	अहनम्	अहन्व	अहन्म

(घ) भू धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

(ङ) अद् धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आदत्	आत्ताम्	आदन्
मध्यम पुरुष	आदः	आत्तम्	आत्त
उत्तम पुरुष	आदम्	आद्व	आद्म

(च) हु धातु

लङ् लकार्

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः
मध्यम पुरुष	अजुहोः	अजुहुताम्	अजुहुत
उत्तम पुरुष	अजुहुवम्	अजुहुव	अजुहुम

प्र.संख्या (6) निम्नलिखित में से किन्हीं चार श्लोकों का हिन्दी में अनुवाद करें। **5×4=20**

(क) शीलं शौचं क्षान्तिर्दाक्षिण्यं मधुरता कुले जन्म।

न विराजन्ति हि सर्वे वित्तविहीनस्य पुरुषस्य।।

(ख) विफलमिह पूर्वसुकृतं, विद्यावन्तोऽपि कुलसमुद्भूताः।

यस्य यदा विभवः स्यात्तस्य तदा दासतां यान्ति।।

(ग) व्याधितेन सशोकेन चिन्ताग्रस्तेन जन्तुना।

कामार्तेनाऽथ मत्तेन दृष्टः स्वप्नो निरर्थकः।।

(घ) सा जिह्वा या जिनं स्तौति तच्चित्तं यज्जिने रतम्।

तावेव च करौ श्लाघ्यौ यौ तत्पूजाकरौ करौ।।

(ङ) अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।

अतिलोभाऽभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।।

(च) प्रतिदिवसं याति लयं वसन्तवाताहतेव शिशिरश्रीः।

बुद्धिर्बुद्धिमतामपि कुटुम्बभरचिन्तया सततम्।।

उत्तरम् :–

(क) श्रेष्ठ आचरण, दया, उत्तम स्वभाव, पवित्रता, क्षमा एवं उत्तम कुल में जन्म होना ये सभी गुण दरिद्र पुरुष में विराजमान होने पर भी उसकी कीर्ति बढ़ाने में सक्षम नहीं है।

(ख) इस संसार में पहले के किए गए सत्कार्य पुण्य इत्यादि व्यर्थ ही हैं क्योंकि बड़े बड़े कुलीन एवं विद्वान् पुरुष भी धनवान् व्यक्तियों के यहाँ दास बने हुए हैं।

(ग) व्याधिग्रस्त (रोगी), शोकाकुल, चिन्ताओं से ग्रस्त, कामासक्त एवं उन्मत्त पुरुष के द्वारा देखा हुआ स्वप्न निरर्थक ही होता है।

(घ) जिस जिह्वा से जिनों की स्तुति की जाती है वही जिह्वा जिह्वा है। जो चित्त जिनों (जैन साधुओं) की स्तुति का ध्यान करता है वही चित्त चित्त है और जिन हाथों से जिनों की पूजा अर्चना होती है वही हाथ प्रशंसा के योग्य है।

(ङ) मनुष्य को अपने जीवन में बहुत अधिक लालच नहीं करना चाहिए एवं न ही लोभ का पूर्णतया त्याग करना चाहिए, क्योंकि जो जन अत्यधिक लोभी होते हैं उनके मस्तिष्क पर विपत्ति के बादल हमेशा घूमते रहते हैं।

(च) अपने जनों (परिवार) के भरण–पोषण की चिन्ता के कारण अतिबुद्धिमान लोगों की बुद्धि भी निरन्तर उसी प्रकार नष्ट हो जाती है जिस प्रकार वसन्त की हवा चलने पर शिशिर काल समाप्त हो जाता है।

प्र. संख्या (7) ब्राह्मणी–नकुल कथा का सारांश अपने शब्दों में लिखें। **20×1=20**

उत्तरम् :–**ब्राह्मणी–नकुल कथा**

किसी नगर में देवशर्मा नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसकी गर्भिणी स्त्री ने एक पुत्र को जन्म दिया। उसी दिन एक नेवली भी एक नेवले को उत्पन्न करके मर गयी ।तब पुत्र पर स्नेह करनेवाली उस ब्राह्मणी ने पुत्र के समान उस नेवले को भी दुग्धपान, उबटन तथा तेल मालिश आदि क्रिया के द्वारा पाला पोसा। किन्तु वह उसका विश्वास नहीं करती थी। पुत्रस्नेह के सर्वोपरि होने के कारण हमेशा डरती रहती थी कि कभी यह अपने जातिगत दोष के कारण पुत्र का अनिष्ट न कर बैठे । क्योंकि कहा भी गया है –

कुपुत्रोऽपि भवेत्पुंसां हृदयानन्दकारकः।

दुर्विनीतः कुरूपोऽपि, मूर्खोऽपि व्यसनी खलः।।

अर्थात् अपना पुत्र चाहे कितना भी दुर्विनीत, कुरूप, मूर्ख, व्यसनी तथा दुर्वृत्त क्यों न हो, वह अपने माता–पिता के हृदय को आह्लादित करने वाला ही होता है।

लोग ऐसा कहते हैं कि चन्दन अत्यन्त शीतल होता है किन्तु पुत्र के शरीर का स्पर्श तो चन्दन से भी बढ़कर शीतल तथा आनन्ददायक होता है।

एक दिन ब्राह्मणी ने पुत्र को शय्या पर सुलाकर और जल के घड़े को लेकर पति से कहा – स्वामिन्! मैं जल लाने के लिए तालाब जा रही हूँ। आप इस नेवले से बालक

की रक्षा करना। उसके चले जाने पर ब्राह्मण भी घर को खाली छोड़कर भिक्षाटन के लिए कहीं चला गया। इसी समय दुर्भाग्य से एक काला साँप बिल से निकला। नेवले ने उस सर्प को देखते ही उसे अपना स्वाभाविक शत्रु समझकर भाई की रक्षा के निमित्त सर्प के साथ लड़कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए। फिर ब्राह्मणी के लौटने पर वह नेवला प्रसन्नतापूर्वक अपने कार्य को प्रकट करने के लिए खून से लथपथ मूँह वाला माता के पास पहूँचा। वह उसके रक्तार्द्र मुख को देखते ही शंकित हो उठी और यह सोचकर कि इस पापी नेवले ने मेरे पुत्र को मारकर खा लिया है, क्रोधातुर हो उसने जल से भरे घड़े को नेवले के ऊपर पटक दिया।

इस प्रकार नेवले को मारकर विलाप करती हुई वह ब्राह्मणी ज्यों ही घर में आयी त्यों ही उसने पुत्र को पूर्ववत् सोते देखा और खाट के पास में ही अुकड़े टुकड़े किये हुए काले साँप को देखकर नकुल की मृत्यु से शोकाकुल हो उठी और आनी छाती एवं माथे को पीट पीटकर रोने लगी। इतने में भिक्षा लेकर ब्राह्मण भी आ गया। घर के अन्दर जाकर देखा कि नकुल के वध से ब्राह्मणी शोकाकुल हो बिलख–बिलख कर रो रही है। पति को देखते ही उसने रोकर कहा – अरे लोभी, लोभाभिभूत होकर तुमने मेरी बात नहीं मानी। तो अब पुत्र की मृत्यु के दुःखरूपी वृक्ष के फल भोगो। अथवा यह ठीक ही कहा गया है –

"अतिलोभो न कर्तव्यो लोभं नैव परित्यजेत्।

अतिलोभाभिभूतस्य चक्रं भ्रमति मस्तके।।"

प्र. संख्या (8) मूर्ख पण्डित की कथा का सारांश अपने शब्दों में लिखें।**20×1=20**

उत्तरम् :–**मूर्ख पण्डित की कथा**

किसी नगर में चार ब्राह्मण आपस में मित्र बनकर रहते थे। बचपन में उनका विचार हुआ कि दूसरे देश में जाकर विद्या पढ़ी जाय। दूसरे दिन आपस में विचार करने के बाद वे विद्या पढ़ने के लिए कान्यकुब्ज देश की ओर चल पड़े और वहाँ पहूँचकर किसी पाठशाला में विद्या पढ़ने लगे। एकाग्रचित्त से बारह वर्ष तक अध्ययन करने केबाद ये चारों अद्भुत विद्वान् हो गये। एक दिन चारों ने आपस में विमर्श किया – हम सभी विद्याओं में निपुण हो चुके। अब गुरुजी की आज्ञा लेकर हमें अपने घर चलना चाहिए। यह निश्चय करके वे गुरुजी के पास गए और उनसे पूछकर अनुमति प्राप्त करके अपनी–अपनी पुस्तकों को साथ लेकर घर के लिए प्रस्थान कर दिए। कुछ दूर जाने के बाद मार्ग दो तरफ जाते हुए देखकर किस मार्ग से चला जाय, यह निश्चय करने के लिये एक जगह बैठ गये।

उनमें से एक ने पूछा – 'किस मार्ग से चला जाय ?'

उसी समय पास के नगर में एक बनिये का लड़का मर गया था। उसके दाह संस्कार के लिए वाणिक् लोग जा रहे थे। उस शवयात्रा को देखकर चारों में से एक ने पुस्तक देखकर कहा –**''महाजनो येन गतः स पन्थः''** अर्थात् महाजन लोग जिस रास्ते से जायें, उसी रास्ते से अन्य लोगों को भी जाना चाहिए। अतः हमें भी वणिक्समूह के साथ चलना चाहिए। उनके कथन पर चारों व्यक्ति उस वणिक्समूह के पीछे चल दिये। जैसे ही वे पण्डित महाजनों के साथ चलते हैं वैसे ही वहाँ श्मसान पर उन्होंने कोई गधा देख लिया। तब दूसरे ने पुस्तक खोलकर देखा और कहा –

उत्सवे व्यसने प्राप्ते दुर्भिक्षे शत्रुसंकटे।

राजद्वारे श्मषाने च यस्तिष्ठति स बान्धवः।।

उत्सव, मांगलिक कार्यों में, विपत्ति में, अकाल में और शत्रुओं द्वारा उपद्रव काल में, राजसभा में तथा श्मशान में जो साथ देता है वही सच्चा बन्धु होता है।

अतः यह हमारा भाई है। उसकी बात सुनकर कोई उस गधे को गले लगाने लगा तथा कोई उसके चरण धोने लगा। तत्पश्चात् जब उन पण्डितों ने चारों दिशाओं में देखा तो उन्होंने तीव्र गति से जाते हुए एक ऊँट को देखा। उसे देखकर उन्होंने कहा–यह क्या है? तब तीसरे ने पुस्तक खोलकर देखा और कहा–**धर्मस्य त्वरिता गतिः।** अर्थात् धर्म की गति तीव्र होती है तो निश्चय ही यह साक्षात् धर्म ही है। इसके पश्चात् चौथे पण्डित ने कहा–**इष्टं धर्मेण योजयेत्।** अर्थात् बन्धु को धर्म के साथ जोड़ देना चाहिए। ऐसा सोचकर उन पण्डितो ं ने उस गधे को ऊँट के गले से बांध दिया। फिर यह बात किसी ने गधे के स्वामी धोबी को बताई तो वह धोबी उन पण्डितो को मारने के लिए वहाँ पहुँचा। तब दूर से ही उसे देखकर वे पण्डित वहाँ से भाग निकले। इसके पश्चात् भागते हुए कुछ दूर आगे बढ़ने पर उन्हें एक नदी मिली। उस नदी की जलधाराओ ं में आते हुए एक पलाश के पत्ते को देखकर उन पण्डितों में से एक ने कहा–**आगमिष्यति यत्पत्रं तद्स्मांस्तारयिष्यति'।** अर्थात् यह आने वाला पत्ता हम सभी को नदी पार करा देगा। यह कहकर वह मूर्ख पण्डित नदी की धारा में कूद पड़ा। उसे नदी की तेज धारा में बहता हुआ देखकर उसकी चोटी पकड़ कर दूसरे पण्डित ने कहाः–

सर्वनाषे समुत्पन्ने अर्धं त्यजति पण्डितः।

अर्धेन कुरुते कार्यं, सर्वनाषो हि दुसहः।।

अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति पूर्ण विनाश की स्थिति आने पर आधा छोड़ देता है और अपना कार्य सिद्ध करते है। क्योंकि सर्वनाश बड़ा ही दुखदायी होता है।

ऐसा कहकर उसने नदी में बहने वाले उस पण्डित का सिर काट दिया।

इसके पश्चात् आगे जाते हुए उन पण्डितों को एक गांव मिला। ग्रामीणों ने उन्हे ं अलग–अलग अपने–अपने घरो ं मे ं भोजन के लिए निमंत्रित किया, तब एक को घी और खाण्ड से मिश्रित सेवई भोजन में दी गई। उन्हें देखकर उस पण्डित ने विचार कर कहा–**''दीर्घसूत्री विनष्यति।''** अर्थात् दीर्घसूत्री विनाश को प्राप्त हो जाता है। ऐसा कहकर वह भेाजन त्याग कर चला गया। दूसरे पण्डित को भोजन में मांड परोसा गया। उसने कहा– ''**अतिविस्तारविस्तीर्णं तदभ्वेन्न चिरायुषम्।''** अर्थात् अधिक विस्तार वाली वस्तु दीर्घ जीवन प्रदान नहीं करती। ऐसा कहकर वह भोजन का त्याग कर चला गया। उधर तीसरे पण्डित को भोजन में बड़ा दिया गया। उसे देखते ही पण्डित ने कहा–**''छिद्रष्वनर्था बहुलीभवन्ति।''** अर्थात् छेद हो जाने पर विपत्ति बढ़ती है। ऐसा कहकर वह भी भोजन त्यागकर चला गया। इस प्रकार वे तीनों पण्डित भूखे भी रह गये और लोगो ं के लिए हंसी का पात्र बन गये। और अन्त में बिना खाये–पिये उस स्थान से अपने देश की ओर चले गए।

प्र. संख्या (9) लोभाविष्ट चक्रधर की कथा को लिखकर लोभ से होनेवाली गति का निरूपण करें।**20×1=20**

उत्तर –**लोभाविष्ट चक्रधर की कथा**

किसी स्थान पर आपस में चार ब्राह्मणों के पुत्र परस्पर मित्र बनकर रहते थे। वे सभी दरिद्रता से पीड़ित होकर आपस में मन्त्रणा करने लगे अहो! दरिद्रता को धिक्कार है क्योंकि कहा भी गया है कि –

वरं वनं व्याघ्रगजादिसेवितं, जनेन हीनं बहुकण्टकावतम्।

तृणानि शय्या परिधानवल्कलं, न बन्धुमध्ये धनहीनजीवितम्।।

अर्थात् सिंह, हाथी आदि से भरे हुए भयानक घने जंगलों में भी निवास करना अच्छा है, और तिनकों की शय्या एवं वल्कल आदि वस्त्रों को पहनकर निर्वाह कर लेना भी अच्छा है परन्तु भाई बन्धुओं के बीच धनहीन होकर जीवन जीना बिल्कुल भी श्रेष्ठ नहीं है।

निर्धन मनुष्यों द्वारा अच्छी प्रकार सेवा किये जाने पर भी उनका स्वामी उनसे द्वेष ही रखता है। अच्छे बन्धु बान्धव भी उसे प्रेम नहीं करते, पुत्र भी साथ नहीं देते। निर्धन मनुष्य शौर्यादिगुण युक्त होने पर भी शोभा नहीं पाते। विपत्तियां उनके सामने मुख फाड़े बढ़ती रहती है। उच्च कुल में पैदा होने वाली अपनी कुलीन पत्नी भी निर्धन से मुख मोड. लेती है अधिक क्या कहा जाये। न्याय के पथ पर चलने वाले उसके सखे (मित्र) भी छोडकर चले जाते हैं।इस मृत्युलोक में मनुष्य शूरवीर (पराक्रमी) सुन्दर, भाग्यशाली, प्रवक्ता और

शास्त्र, शस्त्रों का ज्ञाता होकर भी यदि धनहीन हो तो वह यश व सम्मान को प्राप्त नहीं कर सकता है।

इसलिए हमें धनोपार्जन के लिए कहीं ओर चले जाना चाहिए, ऐसा निश्चय कर उन्होंने अपना देश, नगर एवं सुहृदय मित्रों सहित घर को त्याग कर प्रदेश के लिए प्रस्थान किया, यह ठीक ही कहा गया है–

सत्यं परिज्यजति मुञ्चति बन्धुवर्गं,

शीघ्रं विहाय जननी मपि जन्मभूमिम्।

सन्त्यज्य, गच्छति विदेषमभीष्टलोकं,

चिन्ताकुलीकृतमतिः पुरूषोऽत्र लोके।।

अर्थात्इस संसार में कुटुम्ब पोषण की चिन्ताओं से ग्रस्त होकर सत्य का परित्याग कर देते हैं, बन्धु–बान्धुवों को छोड़ देते हैं और अपनी जन्म देने वाली माता का तथा जन्मभूमि जैसे प्रिय स्थानों को छोड़ कर विवश हो कर मनुष्य परदेश चले जाते हैं ।

इस तरह क्रम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हुए वे सभी ब्राह्मण–कुमार अवन्तिका पहुँचे। वहाँ शिप्रा नदी के जल से स्नान करने के पश्चात् ज्यो ं ही महाकाल को प्रणाम कर मन्दिर से बाहर निकले त्योंही भैरवानन्द नाम का एक योगी उनके सम्मुख आ पहुँचा। ब्राह्मणोचित विधि से उनका सम्मान कर उन्हें संतुष्ट कर वे चारो ं उनके साथ उनके मठ तक चले गये तब भैरवानन्द ने उनसे पूछा–आप लोग कहाँ से आ रहे है? कहाँ जाओगे? और क्या प्रयोजन है? तब उन्हो ं ने कहा–हम लोग धन पाने की सिद्धि की कामना से यात्रा कर रहे है। हम वहाँ जायेंगे जहाँ या तो धन प्राप्त होगा या मृत्यु होगी। यही हमारा अटल निर्णय है। तत्पश्चात् ब्राह्मण पुत्रों ने भैरवानन्द योगी से कहा–आप धन प्राप्त करने के अनेकों उपाय यथा पातालगमन, यक्षिणीसिद्धि, महाकायादि सिद्धि के लिए शमशानवास, गौ एवं मनुष्य आदि के महामासं की बिक्री या सिद्धगुटिका आदि के निर्माण आदि उपायों में से कोई उपाय हमें भी बतायें। हमने कर्ण परम्परा से ऐसा सुना है कि आप अलौकिक शक्ति सम्पन्न योगी हैं। हम भी अत्यन्त साहसी हैं, कहा भी गया है–

महान्त एव महतामर्थं साधयतिुं क्षमाः।

ऋते समुद्रादन्यः को बिभर्ति वडवाऽनलम्?।।

अर्थात् महान लोगो के कायो ं को श्रेष्ठ लोग ही साधने मे ं सफल होते हैं। समुद्र के विना बडवानल को धारण करने में और कौन समर्थ हो सकता है।

तत्पश्चात् भैरवानन्द ने अनेक क्रियाओं द्वारा चार सिद्व गुटिकाएँ बनाकर उन्हें दी और कहा–आप लोग उत्तर दिशा की ओर जाइए। वहाँ जाते हुए जिस स्थान पर यह गुटिका,

वहाँ निश्चित रूप से रत्नों का खजाना प्राप्त होगा उस स्थान को खोदकर खजाना प्राप्त कर शीघ्र लौट आना। इस प्रकार गुटिकाएँ लेकर जाते हुए उन कुमारों में से एक के हाथ से एक स्थान पर गुटिका गिर पड़ी। उसने उस जगह को खोदकर देखा तो पाया कि वहाँ ताँबे की खान है। तदन्तर उसने साथियों से कहा– अरे यहाँ से जितना चाहो ताँबा ले लो। तब अन्य तीनो ं ने कहा–अरे मूर्ख इस ताँबे को लेकर क्या होगा? इसे प्रचुर मात्रा मे ं लेकर भी हमारी दरिद्रता का नाश नहीं होगा। अतः उठो और आगे बढ़ो। तदनन्तर पहले कुमार ने कहा– आप लोग जाइए, पर मैं आगे नहीं जाऊँगा ऐसा कहकर वह इच्छानुसार ताँबा लेकर लौट गया जबकि अन्य तीनों मित्र आगे बढ़ गये। ज्यो ं ही वे कुछ दूर चले कि आगे चलने वाले मित्र के हाथ से गुटिका गिर पड़ी। उसने वहाँ खोदना प्रारम्भ किया और उसे चाँदी की खान मिल गई। इसके पश्चात् उसने हर्षित होकर कहा–अरे इच्छानुसार यहाँ से चाँदी ले लो। अब आगे मत जाइए, जब उन दोनों ने कहा–ओह पहले तांबे की खान उसके पश्चात् चाँदी की खान मिली, तो आगे निश्चित रूप से सोने की खान मिलेगी। इसकी (चाँदी की) प्रचुर मात्रा ले लेने पर भी हमारी दरिद्रता का नाश नहीं होगा, तो चलो हम दोनों आगे चलें। ऐसा कहकर वे दोनों आगे चल पड़े। पर वह ब्राह्मणकुमार सामर्थ्यनुसार चाँदी लेकर लौट गया।उन दोनों के आगे बढ़ने पर उनमें से एक के हाथ से गुटिका गिर गई। ज्यो ं हि उसने प्रसन्न होकर खोदकर देखा उसको सोने की भूमि दिखाई दी वह बालो–अरे इच्छानुसार सोना ले लो सोने की तुलना में कोई दूसरी उत्तम वस्तु नहीं। मिलेगी तब दूसरे ने कहा–मूर्ख तुम कुछ नहीं जानते देखो पहले तांबे की खान मिली उसके पश्चात् चाँदी की और फिर सोने की खाल मिली इसके पश्चात् अब निश्चित ही रत्नों की खान प्राप्त होगी। जिससे एक के मिल जाने पर भी सारी दरिद्रता दूर हो जाएगी, अतः उठो और आगे बढ़ो ं । इस अधिक बोझ वाले सोने से क्या लाभ होगा? वह बोला–तुम आगे जाओं मैं यही रूक कर तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ, उसके ऐसा कहने पर वह चौथा ब्राह्मणकुमार अकेला ही आगे चल पड़ा। ग्रीष्म ऋतु के तपते हुए सूर्य की किरणों से उसकी देह व्याकुल हो गयी और जोर की प्यास के कारण वह अपने सिद्धिमार्ग छोड़कर इधर–इधर घूमने लगा। इस प्रकार घूमते हुए एक जगह रक्त से सने हुए शरीर वाले एक व्यक्ति को देखा जिसके सिर पर चक्र घूम रहा था। पश्चात् तीव्र गति से उसके पास जाकर बोला–अरे भैया आप कौन है? और यह चक्र आपके सिर पर क्यों घूम रहा है? मुझे प्यास लगी है यदि कहीं पर जल हो तो मुझे बताईये।

तत्पश्चात् उससे बात करते समय वह चक्र उसके सिर से उतर कर ब्राह्मणकुमार के सिर पर घूमने लगा। ब्राह्मणकुमार ने आश्चर्य से पूछा–भद्र यह क्या हो गया। उसने कहा–इसी प्रकार यह मेरे सिर भी घमूने लगा था।

ब्राह्मण कुमार ने कहा अच्छा बताओ यह कब उतरेगा? मुझे बड़ी वेदना हो रही है। उसी चक्रमुक्त व्यक्ति ने कहा–जब तुम्हारे ही समान कोई दूसरा पुरूष ऐसी सिद्धि गुटिका को लेकर यहाँ आयेगा और तुमसे इसी प्रकार बातचीत करेगा तब यह चक्र तुम्हारे सिर से उतर कर उसके सिर पर चला जायेगा।

ब्राह्मण कुमार ने पूछा–तुमने कितने समय तक इस चक्र की पीड़ा सहन की ? उस चक्रमुक्त व्यक्ति ने पूछा–पृथ्वी पर इस समय राजा कौन है? ब्राह्मण कुमार ने उत्तर दिया वीणा वादन में निपुण वत्सराज। तब उस चक्रमुक्त पुरूष ने कहा–समय की गणना तो मैं नहीं जानता किन्तु उस समय राजा राम थे तब मैं दरिद्रता से पीड़ित होकर इसी प्रकार सिद्धि गुटिका लेकर इस पथ पर आया था यहाँ पर आकर मस्तिष्ठ पर चक्र घूमते हुए एक अन्य व्यक्ति को देखकर उससे कुछ पूछ ही रहा था, कि मेरे ऊपर यह चक्र घूमने लगा।

उस ब्राह्मण कुमार ने पूछा–इस प्रकार सिर पर स्थित इस चक्र के कारण आपको भोजन व जल की प्राप्ति कैसे होती रही है?

उस चक्रमुत व्यक्ति ने उत्तर दिया–मित्र, कुबेर ने धन के लालच मे ं सिद्धि गुटिका लेकर आने वाले पुरूषो ं द्वारा कोशो ं के लूटे जाने के डर के लिए चक्र के घूमने का यह भय उपस्थित किया है। इसलिए शायद ही कोई इधर आता है, यदि लालचवश कोई आ भीजाता है तो भूख, प्यास, नींद और बुढ़ापें एवं मृत्यु के भय से रहित होकर केवल चक्र की वेदना का ही अनुभव करता है। अब आप मुझे घर जाने की आज्ञा प्रदान करें। ऐसा कहकर वह तुरन्त वहाँ से चल दिया।

चौथे साथी के बहुत देर लगाने पर उसे खोजता हुआ, उसके पदचिन्हों को देखता हुआ उस वन में आ गया। इसके पश्चात् उसने देखा कि उसके मित्र का शरीर खून से लथपथ है और उसके सिर पर तीक्ष्ण धार वाला चक्र घूम रहा है और वह पीड़ा के कारण बैठकर रो रहा है, तब उसके समीप जाकर सभी बातें उससे पूछने लगा–मित्र यह क्या हुआ? तब उसने उत्तर दिया मित्र– यह विधि का निष्ठुर विधान था। सुवर्ण सिद्धि ने पूछा– यह किस प्रकार हुआ? इसका कारण बताओं? उसके ऐसे पूछने पर चक्रधर ने उसे सारा किस्सा सुनाया। चक्रधर का किस्सा सुनकर सुवर्ण सिद्धि ने उसे भला–बुरा कहते हुए कहा– मैंने तुम्हे बारंबार मना किया, लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी। अब क्या किया जा सकता है? तुम विद्यावान एवं कुलीन होकर भी वास्तव में मूर्ख हो अथवा किसी ने उचित ही कहा गया है

वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्याया बुद्धिरूत्तमा।

बुद्धिहीना विनष्यन्ति, यथा ते सिंहकारकाः।।

अर्थात् बुद्धि विद्या की तुलना की श्रेष्ठ होती है, देखिए बुद्धिहीनता के कारण मनुष्य विद्यावान होकर भी वैसे ही न हो जाता है जैसे मृत संजीवनी विद्या के ज्ञान का ज्ञानी होकर भी ब्राह्मणों ने अपनी बुद्धिहीनता के कारण शेर को जीवित किया और विनाश को प्राप्त हुए।